P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

एस. आर. हरनोट की कहानी 'जूजू' में बदलते नैतिक मूल्य

गुरूप्रीत कौर
शोधार्थी,
हिंदी विभाग,
गुरूकाशी विश्वविद्यालय,
तलवंडी साबो, बठिंडा,
पंजाब, भारत

सुरजीत सिंह
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभाग,
गुरूकाशी विश्वविद्यालय,
तलवंडी साबो, बठिंडा,
पंजाब, भारत

सारांश

एस.आर.हरनोट जी को अगर हम वर्तमान का प्रेमचंद कहे तो इसमें कोई अतिकथनी नहीं है। क्योंकि प्रेमचंद की भांति ही हरनोट जी ने भी शोषिक –शोषित का मुद्दा उठाया है। मूल रुप से कहानीकार हरनोट जी ने अनेक कहानियों का सृजन किया है। जो वर्तमान सामाजिक समस्याओं पर आधारित होने के साथ–साथ सूक्ष्म मुद्दों पर से भी पर्दा हटाती है। हरनोट जी का इकलौता सुप्रसद्धि उपन्यास 'हिडिम्ब' पूर्ण रूप से संसार जननी प्रकृति से सम्बन्धित है। प्रकृति के लिए मानव जो समस्याएँ उपहार स्वरूप भेंट कर रहा है को पेश किया है। उनके कथा–साहित्य में यह भी दिखाया गया है कि किस भॉति आधुनिक पीढ़ी अपनी भारतीय संस्कृति को छोड़ पश्चिमी संस्कृति की ओर भागी जा रही है। गांव को लोगो का शहरो की ओर प्रस्थान करने के साथ–साथ उनके रीति–रिवाजों, रहन–सहन में भी परिवर्तन आता है जो संस्कृति का संक्रमण है। उधर दूसरी ओर मेहतकक्ष और कलाशील लोगों की कला को भी उभारा है जो गरीबी के बावजूद भी मेहनती और कलाशील होने कारण महल से भी सुंदर घर का निर्माण करते है।

मुख्य शब्द : बदलते नैतिक मूल्य, सामाजिक समस्या, संस्कृति, हरनोट, नैतिकता।

प्रस्तावना

नैतिक मूल्य और नैतिकता का सम्बन्ध मानव के आचरण पक्ष से होता है। नीति से ही ये नैतिक तथा नैतिकता शब्द बने हैं। नीति से क्या तात्पर्य है, इस विषय में हम यहीं कह सकते हैं कि समाज, धर्म, तथा राष्ट्र के द्वारा निर्धारत नियमों के अनुसार–चलना ही नीति है। वही इन नियमों के विरूद्ध चलना अनीति कहलाता है। नैतिक मूल्य ऐसे ही समाज द्वारा निर्धारित किए गए है।

साहित्य में संस्कृति का विशेष स्थान है। संस्कृति समय के साथ परिवर्तनशील है, मूल्य ऐसा शब्द है जोकि मुख्यतः संस्कृति और वाणिज्य–संस्कृति में अपना विशेष महत्त्व रखते है। वाणिज्य शास्त्र से जुड़ा हुआ है इस कारण नैतिक मूल्य समाज व संस्कृति मे अपना विशेष महत्व रखते हैं। कुछ नैतिक मूल्य जो समाज द्वारा निर्धारित किए गए है। वे हैं –अहिंसा, प्रेम, त्याग, दया, धर्म, सत्य, क्षमा, पवित्रता आदि। परन्तु पूर्व और पश्चिम के क्षेत्रो में नैतिक मूल्य सम्बन्धी बहुत परिवर्तन है। किन्तु उदात्त व्यक्ति में नैतिक मूल्य के सभी गुण पाए जाते है। जो काम समाज व मानव के कल्याण हेतु किए गए वहीं नैतिक कर्म और मूल्य के अंर्तगत आते है।

अध्ययन का उद्देश्य

मेरे इस शोधकार्य का उद्येश्य वर्तमान समय में मूल्यों का पतन है कि किस प्रकार आज का मनुष्य अपने सांस्कृतिक मूल्यों को भूलता जा रहा है।

एस. आर. हरनोट की कहानी 'जूजू' में बदलते नैतिक मूल्य

एस. आर. हरनोट इक्कीसवीं सदी के एक ऐसे कथाकार है जिन्होने उन लोगों की गाथा को पेश किया है जो आज वर्तमान में भी जातीय, आर्थिक और असंतुलित सामाजिक हालातों से विवश होकर अपना जीवन बसर करने के लिए विवश है। हरनोट जी ने अपनी कलम की सहायिता से भारतीय संस्कृति के हो रहे संहार को भी शब्दो का रूप दिया है। आधुनिक मानव जाति अपने मूल्य, कदरों – कीमतों को छोड़ पदार्थ के पीछे भाग रही है। भौतिक सुविधाएँ ही उसका सब कुछ है। हरनोट जी के साहित्य में भी यही दिखाने का प्रयास किया गया है।

नैतिकता समाज का वह तत्व है जिसकी उपस्थिति में ही सभ्य समाज का निर्माण किया जा सकता है। उचित अनुचित की वैचारिकता को नैतिकता कहा जा सकता है। जो हमें किसी काम को करने अथवा न करने की आज्ञा दे,

उसे भी नैतिकता का नाम दिया जा सकता है। नैतिकता का आधार पवित्रता न्याय और सत्य है। अंतरात्मा की सही आवाज नैतिकता है।

नैतिक शब्द नीति के साथ इक प्रत्यध जुड़ने से बना है और नैतिकता का तात्पर्य नियमों की उस व्यवस्था से है जिसके द्वारा व्यक्ति का अंतः करण अच्छे और बुरे का बोध प्राप्त करता है और समाज जिन व्यवहारो को समूह के कल्याण के लिए आवश्यक समझता है वही व्यवहार धीरे – धीरे नैतिकता का रूप ले लेता है। दूसरी ओर मूल्य के बारे में कहा जाता है कि यह शब्द अंग्रेजी भाषा के शब्द Value शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। अंग्रजी भाषीय शब्द Value लैटिन भाषा के 'वैलुअर' शब्द से उत्पन्न हुआ माना जाता है। यह शब्द किसी व्यक्ति अथवा पदार्थ के गुण, विशेषता, कीमत एंव उपयोगिता को पर्दाशित करता है। हम कह सकते है कि अच्छे गुण, व्यवहार, विशेषता को हम नैतिक मूल्य के अंतगर्त रख सकते है।

आधुनिक समय में हम अपने चारो ओर इस का घात होते देख सकते है। इस का कारण एक न होकर अनेक है जैसे – असंतोष, अराजकता, उपद्रव, असफलता असवाद, अलगाव, असामनता, अपमान, आस्थिरता, अंदोलन, संघर्ष, हिंसा आदि ने आज के युग को घेर लिया है। व्यक्ति एवं समाज में साम्प्रदायिकता जातीयता, भाषावाद, श्रेत्रीयावाद हिंसा की भवनाओं व समस्यओं का वास्तव में प्रमुख कारण मनुष्य का नैतिक व चारित्रिक पतन दूसरे शब्दों में कहे तो नैतिक मूल्यों का विघटन है। देखा जाए तो मूल्य पढ़ाये नहीं जाते बल्कि अधिग्रहीत किए जाते है। बल्कि यह पर्यावरणीय घटको से सीखे जाते है, समाज से ग्रहण किए जाते है। परन्तु आज कल नैतिक मूल्य हर ओर छिन्न – भिन्न होते दिखाई देते है। अगर सच कहूं तो साहित्य एक ऐसा सफल साधन है जिसके माध्यम से हम नैतिकता का पतन होते देख सकते है, समझ सकते है और पढ़ सकते है। संत कबीर जी ने भी अपने दोहो मे नैतिकता का गुणगाण किया है।

1. ज्ञानी, ध्यानी, संयमी, दाता शुरू अनेक
   जपीया तपिया बहुत है, शीलवंत कोई एक।।
2. श्लिवंत सबसे बड़ा, सब रतन्न की खान।
   तीन लोग की संपदा, रही शील में आन।।

हरनोट जी भी एक ऐसे कथाकार है जिन्होने अपनी लेखनी की सहायिता से नैतिक पतन को उजागर किया है। वैसे तो उनकी सभी कहानियों और उपन्यास में नैतिकता के पतन को दिखाया गया है अगर हम बात करे उनके कहानी संग्रह 'लिटन ब्लॉक गिर रहा है' में छपी कहानी 'जूजू' की तो इसमे दुनिया के सबसे महान, पवित्र और कोमल रिशते की बात की गई है। वो है मां का रिशता। एक मां अपने अपने बच्चे के लिए दुनिया की कोई भी मुश्किल सहने को तैयार रहती है किन्तु वह अपने बच्चे को कष्ट में नहीं देख सकती। कहते है कि मां खुद गीले स्थान पर रात भर सोती है किन्तु अपने बच्चे को सूखे स्थान पर सुलाती है। मॉ बच्चे के लिए किसी भी हद तक जा सकती है। किन्तु आज की मां मां न होकर आधुनिक स्त्री अधिक है। इस कहानी में उत्तर आधुनिकता के दौर में मां की भूमिका और बच्चे के प्रति नजरीय को प्रस्तुत किया गया है। यह कहानी मां की अपने शिशु के प्रति दायित्वहीनता, फर्ज उदासीन, वात्सल्य त्रुटि को चित्रित करती है। भौतिक जीवन की चकाचौंध में तथा पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित मां को अपने शरीर के सौंदर्य की अधिक चिंता है। अपने बच्चे के तन–मन की चिंता नहीं न ही उसके पालण–पोषण का कोई फिर्क। उसे अपने शिशु के तन की कांति और मन के संस्कारो की कोई परवाह नहीं है। मिसेज शर्मा अपने बच्चे को संतुलित भोजन देने की जगह पश्चिमी भोजन अधिक खिलाती है। क्योंकि 'जंक फूड' के बने – बनाए ही विविध रूप मिल जाते है। जब उसका बच्चा रोता है तो गोद में बिठाकर दुलारने की बजाए टी.वी. पर कार्टून दिखाकर उलझा लेती है। मिसेज शर्मा फिर स्वंत्रत हो जाती।

''वह बच्चे को सोफे पर बिठा देती और सामने रखे टीवी को आन कर देती। कार्टून का कोई चैनल लगाए रखती। धीरे–धीरे बच्चे का ध्यान खिलौनो और दूध की तरफ कम और टीवी स्क्रीन पर ज्यादा रहने लगा था। मिसेज शर्मा अब निश्चित होकर अपने बाहर – भीतर के काम निपटाती। यहां तक कि अब वह घंटो पड़ोस की औरतो के साथ गप्पे मार सकती थी। ब्यूटी पार्लर जा सकती थी। यहां तक कि कभी–कभी सहेलियों के साथ फिन्म भी देख आती थी। घर आने पर बच्चा उसे वहीं बैठा, हंसता–खेलत मिलता।''

इस प्रकार कहानीकार हरनोट जी ने बालको के अंतर्मुखी होने की दशा को भी दर्शया है। आधुनिक युग में टी.वी. ओर इंटरनेट के कारण बालक किसी नशे की भांति स्वयं में व्यस्त रहते है। उन्हें किसी दूसरे की आवश्यकता महसूस ही नही होती। पुरातन समय में गांव में ऐसे मनोरंजन के साधन उपलब्ध नहीं होते थे। औरते खेतों में काम करने जाने से पहले अपने बच्चों का छाछ में अंशभर अफीम देकर सुला देती थी ताकि वह निश्चित होकर काम कर सके। किंतु वर्तमान में टीवी इंटरनेट जैसे मनोरंजन के साधन बच्चे को न केवल अंतर्मुखी बना रहे है बल्कि उसके शरीरक और मानसिक विकास के लिए भी जहर का काम कर रहे है। यह मनोविनोद विष बालक के स्वयं माता–पिता द्वारा दिया जाता है जो उसके लिए अत्यंत घातक है।

मिसेज शर्मा तो इतनी हद तक पश्चिमी सोच की शिकार हो चुकी है कि वह अपने – आप को मां दिखाने से भी डरती है ;घबराती है कि कोई उसे यह न बोल दे कि मिसेज शर्मा एक बच्चे को ही जनने के बाद मां दिखने लग गई है। इसके लिए वह न तो उसे अपना दूध पिलाती है और अपने बच्चे को जितना अपने – आप से दूर रखने का प्रयास कर सकती है उतना वह करती है।

''दूध की बोतल के निप्पल को उसके मुॅह में ठूंसती। जब कोई असर नहीं होता तो यूं ही उस अपने दुधुओं के पास ले जाकर घबराते – घबराते उसके ओंठो से गोल हिस्सा छुआ देती और जब उसे लगता कि बच्चा स्तन को चूस लेगा तो झट से किनारे हटा देती। वह अपने 'लुक' का पूरा ध्यान रखती। इसलिए बच्चे को जन्म से ही बोतल के दूध की आदत डलवा दी गई थी।''

निष्कर्ष

परिवर्तन सुष्टि का नियम हैं। परिवर्तन ही जीवन है। इसका तात्पर्य यह नहीं कि हम अपनी संस्कृति को ही त्याग दें। यह भी गलत नहीं है कि पूरानी रसमें रीतियॉ जो अब रूढ़ बन चुकी है उनको त्यागना आवश्यक है किन्तु पूरी तरह से अपनी सभ्यता को छोड़ कर किसी दूसरी सभ्यता को अपनाना एक संक्रमण है। इसी प्रकार एस.आर.हरनोट जी की सभी कहानियों में संस्कृति संक्रमित होती नज़र आती है। 'जूजू में तो एक मां अपने ममत्व को ही भूल गई है। बस वह अपने आप को पश्चिमी रंग–ढंग की आधुनिक स्त्री दिखाने में लगी हुई है। उसे अपने बच्चे का मानसिक एवं शारीरिक विकास कोई मायने नहीं रखता। यहॉ पर स्पष्ट रूप से नैतिक मूल्यों का घाव घान हो रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

डयूई जान – नैतिक जीवन का सिद्धांत – राजकमल प्रकाशन, प्र. स. 1965.

साहित्य के आस्वाद – प्रकृति, पर्यावरण और मनुष्यता की चिंता की कहानियॉ पृ. 173

हरनोट एस.आर. 'जूजू' पृ. 90

साहित्य के आस्वाद – प्रकृति, पर्यावरण और मनुष्यता की चिंता की कहानियॉ पृ. 174

हरनोट एस.आर. – 'जूजू' पृ. 89

http://hdi.handle.net/10603/114785